SKU शोध संचार

(INTERNATIONAL PEER REVIEWED E-RESEARCH JOURNAL)

Impact Factor SJIF 2025 – 5.306

Vol-4, Issue-1 January-March-2026 E-ISSN: 2584-2900

सरस्वती-सिंधु सभ्यता के प्रमुख केन्द्र के रूप में राखीगढ़ी का ऐतिहासिक एवं सांस्कृतिक विश्लेषण

आलोक कुमार पाण्डेय

सह-प्राध्यापक, इतिहास

श्री कृष्णा विश्वविद्यालय छतरपुर (म.प्र.)

शोध सारांश

भारतीय उपमहाद्वीप की प्राचीनतम नगरीय सभ्यताओं में से एक सरस्वती-सिंधु सभ्यता का अध्ययन विश्व इतिहास और पुरातत्व के क्षेत्र में अत्यंत महत्वपूर्ण माना जाता है। इस सभ्यता के प्रमुख केन्द्रों में राखीगढ़ी का स्थान अत्यंत विशिष्ट है। हरियाणा राज्य के हिसार क्षेत्र में स्थित यह पुरास्थल अपने विस्तृत क्षेत्रफल, समृद्ध सांस्कृतिक अवशेषों तथा वैज्ञानिक अनुसंधानों के कारण विशेष महत्व रखता है। हाल के पुरातात्विक सर्वेक्षणों से यह ज्ञात हुआ है कि राखीगढ़ी का विस्तार लगभग 350 हेक्टेयर से अधिक था, जिससे यह सरस्वती-सिंधु सभ्यता के सबसे बड़े नगरीय केन्द्रों में सम्मिलित हो जाता है। इस स्थल से प्राप्त पुरावशेषों में आवासीय संरचनाएँ, अर्द्ध कीमती पत्थरों के मनके, धातु उपकरण, मिट्टी की मूर्तियाँ तथा यज्ञवेदियों के अवशेष शामिल हैं, जो उस समय की विकसित सामाजिक, आर्थिक और सांस्कृतिक संरचना का संकेत देते हैं। इसके अतिरिक्त यहां से प्राप्त मानव कंकालों पर किए गए डीएनए अध्ययन ने इस सभ्यता की उत्पत्ति और मानव प्रवास से संबंधित कई महत्वपूर्ण प्रश्नों पर नई दृष्टि प्रदान की है।

राखीगढ़ी के पुरातात्विक साक्ष्य यह भी संकेत करते हैं कि इस क्षेत्र के निवासी दूरस्थ क्षेत्रों से व्यापारिक संपर्क बनाए हुए थे। इसके साथ ही यहां से प्राप्त सांस्कृतिक अवशेष उस समय के धार्मिक एवं सामाजिक जीवन की झलक प्रस्तुत करते हैं। वर्तमान समय में सरकार द्वारा इस स्थल के संरक्षण और विकास हेतु विशेष योजनाएँ प्रारम्भ की गई हैं, जिससे इसके ऐतिहासिक महत्व को वैश्विक स्तर पर प्रस्तुत किया जा सके।

अतः प्रस्तुत शोध पत्र में राखीगढ़ी की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि, पुरातात्विक महत्व तथा वर्तमान संरक्षण प्रयासों का विश्लेषण करते हुए इसे सरस्वती-सिंधु सभ्यता के प्रमुख केन्द्र के रूप में समझने का प्रयास किया गया है।

बीज शब्द

राखीगढ़ी, सरस्वती-सिंधु सभ्यता, पुरातत्व, नगरीय सभ्यता, प्राचीन भारत, डीएनए अध्ययन, व्यापारिक संपर्क, सांस्कृतिक अवशेष, पुरास्थल, उत्खनन।

प्रस्तावना

भारतीय उपमहाद्वीप का प्राचीन इतिहास अत्यंत समृद्ध और बहुआयामी रहा है। विशेष रूप से सरस्वती-सिंधु सभ्यता को विश्व की प्राचीनतम नगरीय सभ्यताओं में से एक माना जाता है, जिसका विकास लगभग 3000 ईसा पूर्व के आसपास हुआ। इस सभ्यता के अंतर्गत अनेक नगरों का विकास हुआ, जिनमें मोहनजोदड़ो, हड़प्पा, धोलावीरा और लोथल प्रमुख हैं।

इन्हीं महत्वपूर्ण स्थलों में हरियाणा राज्य में स्थित राखीगढ़ी विशेष महत्व रखता है। पुरातात्विक अनुसंधानों से यह स्पष्ट हुआ है कि यह स्थल क्षेत्रफल की दृष्टि से इस सभ्यता के सबसे बड़े नगरों में से एक था। यहां से प्राप्त अवशेष उस समय के उन्नत नगर नियोजन, व्यापारिक गतिविधियों, सांस्कृतिक परंपराओं और सामाजिक संरचना का प्रमाण प्रस्तुत करते हैं। वर्तमान समय में इस स्थल पर निरंतर उत्खनन और अनुसंधान कार्य जारी हैं, जिससे प्राचीन भारतीय इतिहास की अनेक अनसुलझी पहेलियों के समाधान की संभावनाएँ बढ़ी हैं। प्रस्तुत शोध पत्र में राखीगढ़ी के ऐतिहासिक विकास, पुरातात्विक महत्व और समकालीन संरक्षण प्रयासों का विश्लेषण प्रस्तुत किया गया है।

राखीगढ़ी की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि

राखीगढ़ी हरियाणा राज्य के हिसार क्षेत्र में स्थित एक महत्वपूर्ण पुरातात्विक स्थल है। यह स्थल प्राचीन काल में दृषद्वती नदी के तटवर्ती क्षेत्र में विकसित हुआ था, जिसका उल्लेख वैदिक

साहित्य विशेषकर ऋग्वेद में मिलता है। पुरातात्विक अनुसंधानों से यह ज्ञात हुआ है कि राखीगढ़ी का विस्तार लगभग 350 हेक्टेयर से अधिक था। इस कारण इसे सरस्वती-सिंधु सभ्यता का एक विशाल नगरीय केन्द्र माना जाता है। यह स्थल लगभग 11 टीलों में विभाजित है, जिनमें विभिन्न कालखंडों के सांस्कृतिक अवशेष प्राप्त हुए हैं। वैज्ञानिक तिथिकरण से संकेत मिलता है कि इस क्षेत्र में लगभग 8000 वर्ष पूर्व से लेकर लगभग 4000 वर्ष पूर्व तक मानव बसाहट विद्यमान थी। प्रारंभिक और विकसित हड़प्पा काल के अनेक पुरावशेष यहां से प्राप्त हुए हैं, जो इस क्षेत्र की निरंतर सांस्कृतिक प्रगति को दर्शाते हैं।

राखीगढ़ी का पुरातात्विक महत्व

राखीगढ़ी से प्राप्त पुरावशेष इस सभ्यता की सामाजिक, आर्थिक और सांस्कृतिक उन्नति का स्पष्ट संकेत देते हैं। यहां हुए उत्खननों में आवासीय संरचनाएं, मिट्टी के बर्तन, तांबे के उपकरण तथा अर्द्ध कीमती पत्थरों के मनके प्राप्त हुए हैं।

कार्नेलियन, अगेट, जैस्पर और लाजवर्द जैसे पत्थरों से बने मनकों की प्राप्ति से यह संकेत मिलता है कि यहां के निवासियों के दूरस्थ क्षेत्रों से व्यापारिक संबंध स्थापित थे। पुरातात्विक उत्खनन के दौरान विभिन्न प्रकार की यज्ञवेदियों के अवशेष भी प्राप्त हुए हैं जो उस समय की धार्मिक और सांस्कृतिक परंपराओं की ओर संकेत करते हैं। इसके अतिरिक्त यहां से प्राप्त मानव कंकालों के डीएनए अध्ययन ने प्राचीन मानव समुदायों की उत्पत्ति और उनके आनुवंशिक संबंधों के अध्ययन में महत्वपूर्ण योगदान दिया है। हाल के उत्खननों में एक विशाल संरचना के अवशेष भी प्राप्त हुए हैं, जिन्हें कुछ विद्वानों ने खेल या सार्वजनिक गतिविधियों से संबंधित संरचना के रूप में देखा है। इससे यह संकेत मिलता है कि राखीगढ़ी एक सुविकसित और संगठित नगरीय समाज का केन्द्र था।

राखीगढ़ी के संबंध में वर्तमान पहल भारत सरकार द्वारा प्राचीन सांस्कृतिक धरोहरों के संरक्षण और विकास की दिशा में कई महत्वपूर्ण कदम उठाए गए हैं। इसी क्रम में केंद्रीय बजट प्रस्तुत करते हुए निर्मला सीतारमण ने कई प्रमुख पुरातात्विक स्थलों के विकास के लिए विशेष वित्तीय प्रावधान किए हैं। इन स्थलों में राखीगढ़ी के विकास के लिए लगभग 500 करोड़ रुपये

की राशि प्रस्तावित की गई है। इसके अंतर्गत उत्खनन कार्यों को विस्तारित करना, पुरास्थलों का संरक्षण करना तथा उन्हें पर्यटन और अध्ययन के लिए विकसित करना प्रमुख लक्ष्य हैं। वर्तमान में यहां के कुछ उत्खनित टीलों को संरक्षित करने के लिए विशेष शेड लगाए गए हैं तथा भविष्य में पूरे क्षेत्र को एक महत्वपूर्ण पुरातात्विक पर्यटन स्थल के रूप में विकसित करने की योजना बनाई जा रही है। इन प्रयासों से न केवल इस स्थल की ऐतिहासिक धरोहर सुरक्षित होगी, बल्कि आम जनता को भी भारत के प्राचीन गौरव से परिचित होने का अवसर प्राप्त होगा।

निष्कर्ष

उपरोक्त विवेचन से स्पष्ट होता है कि राखीगढ़ी सरस्वती-सिंधु सभ्यता का एक अत्यंत महत्वपूर्ण और विशाल नगरीय केन्द्र था। यहां से प्राप्त पुरातात्विक साक्ष्य उस समय की उन्नत नगरीय व्यवस्था, व्यापारिक गतिविधियों, सांस्कृतिक परंपराओं और सामाजिक संगठन का प्रमाण प्रस्तुत करते हैं। इसके अतिरिक्त आधुनिक वैज्ञानिक तकनीकों, विशेषकर डीएनए अध्ययन, ने इस सभ्यता के मानव समुदायों के अध्ययन में नई संभावनाओं को जन्म दिया है। वर्तमान समय में सरकार द्वारा इसके संरक्षण और विकास के लिए किए जा रहे प्रयास इस स्थल की वैश्विक पहचान को और सुदृढ़ कर सकते हैं। अतः राखीगढ़ी न केवल भारतीय इतिहास के अध्ययन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है, बल्कि यह प्राचीन भारतीय सभ्यता की उन्नत सांस्कृतिक विरासत का भी सशक्त प्रमाण प्रस्तुत करता है।

संदर्भ

1. महाजन, बी. डी. प्राचीन भारत का इतिहास, एस चांद कंपनी, नई दिल्ली,
2. श्रीवास्तव, कृष्ण चंद्र. प्राचीन भारत का इतिहास तथा संस्कृति, यूनाइटेड बुक डिपो, इलाहाबाद,
3. अग्रवाल, डॉ. पी. (2007). The Indus Civilization: An Interdisciplinary Perspective. नई दिल्ली: आर्यन बुक्स इंटरनेशनल।

4. भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण. (2015). राखीगढ़ी उत्खनन प्रतिवेदन. नई दिल्ली: भारत सरकार।
5. संस्कृति मंत्रालय भारत सरकार. (2023). राखीगढ़ी के विकास से संबंधित सरकारी रिपोर्ट. नई दिल्ली: भारत सरकार।
6. बिष्ट, आर. एस. हड़प्पा सभ्यता और सरस्वती नदी. पुरातत्त्व।

SKU SHODH SANCHAR शोध संचार